सूरह — एक कहानी

सूरह अन-नम्ल

चींटी

पूरा सफ़र — एक चींटी, एक परिंदा, और एक मलिका —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 27 • 93 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

व वरिस सुलैमानु दाऊद व क़ाल या अय्युहन्-नासु 'उल्लिम्ना मन्तिक़त्-तैरि
16. और सुलैमान दाऊद का वारिस हुआ, और बोला: ऐ लोगो, हमें परिंदों की बोली सिखाई गई।

रब्बि औज़ि'नी अन अश्कुर नि'अ्मतकल्-लती अन्'अम्त 'अलय्य व 'अला वालिदय्य
19. मेरे रब, मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेमत का शुक्र करूँ जो तूने मुझपर और मेरे वालिदैन पर की।

क़ाल हाज़ा मिन फ़ज़्लि रब्बी लि-यब्लुवनी अ अश्कुरु अम अक्फ़ुर
40. उसने कहा: ये मेरे रब के फ़ज़्ल से है, ताकि वो मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ या ना-शुक्री।

अम्मंय्युजीबुल्-मुज़्तर्र इज़ा द'आहु व यक्शिफ़ुस्-सू
62. या वो कौन जो बे-चारे की पुकार सुनता है जब वो उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर करता है?

क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहि स-युरीकुम आयातिही फ़-तअ्रिफ़ूनहा
93. कहो: सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए; वो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा, तो तुम उन्हें पहचान लोगे।

हमें परिंदों की बोली सिखाई गई

बेटा, ये सूरह 'ता सीन' से और क़ुरआन के 'हुदंव्-व बुश्रा लिल्-मुअ्मिनीन' — मोमिनीन के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी — बयान होने से खुलती है। और फिर ये जल्दी कहानियों में दाख़िल होती है — और इस सूरह की कहानियों में कुछ बहुत छोटी मख़्लूक़ बहुत बड़े सबक़ सिखाती हैं।

ये मूसा (अलैहि0) से आग पर शुरू होती है, फिर दाऊद और सुलैमान (अलैहिमा0) की तरफ़ मुड़ती है: **'व लक़द अतैना दाऊद व सुलैमान 'इल्मा** — और हमने दाऊद और सुलैमान को **इल्म** दिया — **व क़ालल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी फ़ज़्ज़लना 'अला कसीरिम्-मिन 'इबादिहिल्-मुअ्मिनीन** — और उन्होंने कहा: **अल्लाह का**

शुक्र, जिसने हमें अपने बहुत से **मोमिन** बंदों पर **फ़ज़ीलत** दी।'

बेटा, ग़ौर कीजिए इल्म दिए जाने पर उनका जवाब **शुक्र** था — और ग़ौर कीजिए उन्होंने अपना मुक़ाबला अल्लाह के **मोमिन** बंदों से किया, आम आबादी से नहीं। एक नेमत तस्लीम करते हुए भी, उस में कोई ग़ुरूर न था।

'**व वरिस सुलैमानु दाऊद** — और सुलैमान दाऊद का **वारिस** हुआ — **व क़ाल या अय्युहन्-नासु 'उल्लिम्ना मन्तिक़त्-तैरि व ऊतीना मिन कुल्लि शै** — और उसने कहा: **ऐ लोगो, हमें परिंदों की बोली सिखाई गई**, और हमें **हर चीज़** में से दिया गया — **इन्न हाज़ा ल-हुवल्-फ़ज़्लुल्-मुबीन** — बेशक, ये **खुला फ़ज़्ल** है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: उसने अपने तोहफ़े खुले-आम एलान किए — और फ़ौरन उन्हें '**फ़ज़्ल**', अल्लाह की तरफ़ से अता कहा। **उसने ये नहीं कहा 'मैंने हासिल किया'। उसने कहा: ये दिया गया।**

एक चींटी बोलती है, और एक नबी मुस्कुराता है

और अब, बेटा, वो मंज़र जो इस सूरह को उसका नाम देता है — और ये पूरे क़ुरआन के सब से दिलकश और सब से सबक़-आमोज़ लम्हों में से एक है।

सुलैमान (अलैहि0) के लश्कर जमा थे — जिन्न, इंसान और परिंदे — और वो तरतीब-वार सफ़ों में चले।

'**हत्ता इज़ा अतौ 'अला वादिन्-नम्लि** — यहाँ तक कि जब वो **चींटियों की वादी** पर आए — **क़ालत नम्लतुंय्या अय्युहन्-नम्लुद्-ख़ुलू मसाकिनकुम** — **एक चींटी ने कहा: ऐ चींटियो, अपने घरों में दाख़िल हो जाओ** — **ला यह्तिमन्नकुम सुलैमानु व जुनूदुहू व हुम ला यश्'उरून** — **कहीं सुलैमान और उसके लश्कर तुम्हें कुचल न दें जब कि उन्हें शु'ऊर तक न हो।**'

बेटा, देखिए एक चींटी की तंबीह में कितनी हिकमत भरी है।

उसने ख़तरा पहचाना। उसने एक साफ़ हिदायत दी। उसने नाम लिया कौन आ रहा है। और फिर — ये ख़ूबसूरत हिस्सा है — उसने उनका **दिफ़ा'** किया: 'जब कि उन्हें

शु'ऊर तक न हो'। उसने यक़ीनी बनाया कि उसकी क़ौम सुलैमान और उसके लश्कर के बारे में बुरा न सोचे। **वो ज़ालिम नहीं; वो बस तुम्हें देख न सकेंगे।**

बेटा, एक चींटी ने **हुस्न-ए-ज़न** सिखाया — दूसरों के बारे में अच्छा सोचना। हम कितनी बार वहाँ बुराई मान लेते हैं जहाँ सिर्फ़ बे-तवज्जोही थी? किसी ने जवाब न दिया, सलाम न किया, दावत न दी — और हम एक पूरा मुक़दमा बना लेते हैं। **चींटी ने कहा: वो देख नहीं रहे।**

'**फ़-तबस्सम ज़ाहिकम्-मिन क़ौलिहा — तो वो उसकी बात पर मुस्कुराया, ख़ुश** हुआ।'

बेटा, इस लम्हे को महसूस कीजिए। तारीख़ का सब से बड़ा बादशाह, इंसानों और जिन्न के लश्कर के सर-ए-फ़ेहरिस्त, एक अकेली चींटी सुनता है — और मुस्कुराता है।

और देखिए उसकी बात ने उसे क्या करने पर मजबूर किया: '**व क़ाल रब्बि औज़ि'नी अन अश्कुर नि'अ्मतकल्-लती अन्'अम्त 'अलय्य व 'अला वालिदय्य — मेरे रब, मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेमत का शुक्र करूँ जो तूने मुझपर और मेरे वालिदैन पर की — व अन अअ्मल सालिहन तर्ज़ाहु — और ये कि मैं नेक अमल करूँ जिसे तू पसंद करे — व अद्ख़िल्नी बि-रहमतिक फ़ी 'इबादिकस्-सालिहीन — और मुझे अपनी रहमत से अपने नेक बंदों में दाख़िल कर।**'

बेटा, इस दुआ में तीन चीज़ें ग़ौर कीजिए। पहले, वो शुक्र करने की **सलाहियत** माँगता है। दूसरे, वो अपने वालिदैन को शामिल करता है। और तीसरे — ज़मीन का सब से बड़ा बादशाह '**अपनी रहमत से**' नेक बंदों में दाख़िल होने को माँगता है। अपनी बादशाहत से नहीं, अपनी नुबुव्वत से नहीं। **रहमत से।**

बेटा, इस दुआ को याद कर लीजिए। ये छोटी है, और ये शुक्र, क़ुबूल अमल, वालिदैन, और जन्नत में एक आजिज़ दाख़िले को ढाँपती है।

हुदहुद की रिपोर्ट

फिर सुलैमान (अलैहि0) ने परिंदों का जायज़ा लिया और हुदहुद को ग़ायब पाया,

और उसपर सख़्त था — जवाब-देही सब से छोटे सिपाही तक पर भी लागू। और हुदहुद एक ख़बर के साथ लौट आया:

'**अहत्तु बिमा लम तुहित बिही** — **मैंने वो जान लिया जो आपने नहीं जाना** — **व जिअ्तुक मिन सबा-इम्-बि-नब-इंय्यक़ीन** — और मैं आपके पास **सबा** से **यक़ीनी** ख़बर लाया हूँ।'

बेटा, एक परिंदे ने एक नबी-बादशाह से कहा: मैं एक ऐसी चीज़ जानता हूँ जो आप नहीं जानते। और सुलैमान ने सुना। बेटा, **यही अज़मत है — एक लीडर जो सब से निचले दर्जे से मालूमात क़ुबूल करता है।**

'**इन्नी वजत्तुम्-र-अतन तम्लिकुहुम व ऊतियत मिन कुल्लि शै-इंव्-व लहा 'अर्शुन 'अज़ीम** — बेशक, मैंने एक **औरत** को उन पर **हुक्मरानी** करते पाया, और उसे हर चीज़ में से दिया गया है, और उसका एक **अज़ीम तख़्त** है — **वजत्तुहा व क़ौमहा यस्जुदून लिश्-शम्सि मिन दूनिल्-लाह** — मैंने उसे और उसकी क़ौम को अल्लाह के बजाए **सूरज को सजदा** करते पाया।'

बेटा, हुदहुद की फ़िक्र ग़ौर कीजिए: उसकी दौलत या ताक़त नहीं — उसकी **इबादत**। परिंदे का ए'तिराज़ अक़ीदे का था।

सुलैमान (अलैहि0) ने एक ख़त भेजा, और मलिका — बिल्क़ीस, जैसा मुअर्रिख़ नाम लेते हैं — ने अपने सरदार जमा किए। और बेटा, उसकी क़ियादत देखिए:

'**क़ालत या अय्युहल्-मल-उ इन्नी उल्क़िय इलय्य किताबुन करीम** — उसने कहा: ऐ सरदारो, मेरे पास एक **मो'अज़्ज़ज़ ख़त** फेंका गया है।' उसने उन्हें उसका मज़मून पढ़ा, और फिर: '**या अय्युहल्-मल-उ अफ़्तूनी फ़ी अम्री मा कुन्तु क़ाति'अतन अम्रन हत्ता तश्हदून** — **मेरे मामले में मुझे मशवरा दो**; मैं कोई मामला तब तक तय नहीं करती जब तक तुम हाज़िर न हो।'

बेटा, ये अमली **शूरा** है — एक ऐसी मलिका से जिसके पास मुतलक़ ताक़त थी।

उसके सरदार ने जवाब दिया कि वो ताक़तवर जंगजू हैं, मगर फ़ैसला उसपर छोड़ दिया। और उसने इतनी हिकमत की बात कही कि अल्लाह ने उसे महफ़ूज़ कर

लिया: '**इन्नल्-मुलूक इज़ा दख़लू क़र्यतन अफ़्सदूहा व ज'अलू अ'इज़्ज़त अह्लिहा अज़िल्लह** — बेशक, **बादशाह जब किसी शहर में दाख़िल होते हैं तो उसे बर्बाद** करते और उसके **मो'अज़्ज़ज़** लोगों को **ज़लील** कर देते हैं — **व कज़ालिक यफ़्'अलून** — और यूँ ही वो करते हैं।'

बेटा, ये फ़तह की तारीख़ का ख़ुलासा है, एक ऐसी औरत की ज़ुबान से जो जंग के भूके जरनैलों से घिरी थी। और उसने पहले डिप्लोमेसी चुनी: उसने एक तोहफ़ा भेजा, ये परखने के लिए कि वो दौलत चाहने वाला बादशाह है या ईमान चाहने वाला नबी।

और सुलैमान (अलैहि0) का जवाब, बेटा, शान-दार है: '**अ तुमिद्दूननी बि-मालिन फ़-मा अतानियल्-लाहु ख़ैरुम्-मिम्मा अताकुम** — क्या तुम मुझे **दौलत** से मदद देते हो? **मगर जो अल्लाह ने मुझे दिया वो उस से बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया** — **बल अन्तुम बि-हदिय्यतिकुम तफ़्रहून** — बल्कि **तुम** अपने तोहफ़े पर ख़ुश होते हो।'

तुम्हारी नज़र तुम तक वापस आने से पहले

और फिर, बेटा, क़ुरआन के सब से हैरत-अंगेज़ वाक़िआत में से एक।

सुलैमान (अलैहि0) ने अपनी मजलिस से पूछा: '**अय्युकुम यअ्तीनी बि-'अर्शिंहा क़ब्ल अंय्यअ्तूनी मुस्लिमीन** — तुम में से कौन मेरे पास उसका **तख़्त** लाएगा उस से पहले कि वो मेरे पास फ़रमाँबरदार हो कर आएँ?'

'**क़ाल 'इफ़्रीतुम्-मिनल्-जिन्नि अना आतीक बिही क़ब्ल अन तक़ूम मिम्-मक़ामिक** — जिन्न में से एक '**इफ़रीत** ने कहा: मैं उसे आपके पास लाऊँगा **उस से पहले कि आप अपनी जगह से उठें** — **व इन्नी 'अलैहि ल-क़विय्युन अमीन** — और मैं इस के लिए ताक़तवर और अमानतदार हूँ।'

बेटा, ग़ौर कीजिए उसने ठीक वही दो लफ़्ज़ फिर इस्तेमाल किए — 'क़विय्युन अमीन', ताक़तवर और अमानतदार। यूँ एक सलाहियत पेश की जाती है।

'**क़ालल्-लज़ी 'इन्दहू 'इल्मुम्-मिनल्-किताबि अना आतीक बिही क़ब्ल अंय्यर्तद्द इलैक तर्फ़ुक** — **उस शख़्स ने कहा जिसके पास किताब का इल्म था: मैं उसे आपके**

पास लाऊँगा उस से पहले कि आपकी नज़र आप तक वापस आए।'

'**फ़-लम्मा र-आहु मुस्तक़िर्रन 'इन्दहू** — और जब उसने उसे अपने सामने **रखा हुआ देखा**...'

बेटा, ग़ौर कीजिए क़ुरआन क्या फ़र्क़ दिखा रहा है। 'इफ़रीत — एक ताक़तवर जिन्न — ने मिनटों में नापी गई रफ़्तार पेश की। एक शख़्स जिसके पास **किताब का इल्म** था उसने आँख झपकने से भी तेज़ कर दिया।

सबक़ वाज़ेह है: **वही का इल्म ख़ालिस जिस्मानी ताक़त से बढ़ कर है।** बेटा, एक शख़्स के पास जो भी ताक़त हो, वो जो अल्लाह की किताब से जुड़ा है बिल्कुल एक दूसरे दर्जे पर काम कर रहा है।

और अब, बेटा, सुलैमान (अलैहि0) का रद्द-ए-अमल — और यही वो आयत है जो मैं सब से ज़्यादा चाहता हूँ आप इस सूरह से लें:

'**क़ाल हाज़ा मिन फ़ज़्लि रब्बी — उसने कहा: ये मेरे रब के फ़ज़्ल से है — लि-यब्लुवनी अ अश्कुरु अम अक्फ़ुर — ताकि वो मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ या ना-शुक्री — व मन शकर फ़-इन्नमा यश्कुरु लि-नफ़्सिह** — और जो शुक्र करे वो अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्र करता है — **व मन कफ़र फ़-इन्न रब्बी ग़निय्युन करीम** — और जो ना-शुक्री करे — मेरा रब बे-नियाज़, करम वाला है।'

बेटा, जज़्ब कीजिए उसने उस लम्हे क्या कहा। उसके अपने दरबार में अभी एक मो'जिज़ा हुआ है। कोई और मो'अज़्ज़ज़, मुंतख़ब, बरतर महसूस करता।

उसने कहा: ये एक आज़माइश है।

बेटा, यही एक बंदे और एक अपने आप पर मुतअस्सिर शख़्स का फ़र्क़ है। हम नेमतों को **इनाम** समझते हैं — इस बात का सबूत कि हम उनके हक़दार हैं। उसने एक नेमत को **इम्तेहान** समझा: अब देखें मैं शुक्र-गुज़ार हूँ या नहीं।

इसे अपनी ज़िंदगी पर लगाइए। तरक़्क़ी, घर, सेहत, ज़ेहानत, अच्छा ख़ानदान — हर एक आपसे एक सवाल पूछा जा रहा है: **तुम इस का क्या करोगे?** हर तोहफ़ा एक इम्तेहान का पर्चा है जो आपके नाम के साथ आपको सौंपा गया।

शीशे का एक महल

मलिका आ गई, और उसका तख़्त बदल दिया गया था। उसने उसे पहचाना — '**क-अन्नहू हुव**', गोया ये वही है — और उसने ख़ुद को न बाँध कर अपनी ज़ेहानत दिखाई।

फिर: '**क़ील लहद्-ख़ुलिस्-सर्ह** — उसे कहा गया: **महल में दाख़िल हो** — **फ़-लम्मा र-अत्हु हसिबत्हु लुज्जतंव्-व कशफ़त 'अन साक़ैहा** — और जब उसने **उसे देखा** तो उसे **पानी का ज़ख़ीरा समझा** और अपनी पिंडलियाँ खोल लीं — **क़ाल इन्नहू सर्हुम्-मुमर्रदुम्-मिन क़वारीर** — उसने कहा: ये एक महल है जो **शीशे** से **जड़ा** हुआ है।'

बेटा, फ़र्श पानी के ऊपर हमवार शीशा था — और उसने **ज़ाहिर को हक़ीक़त समझ लिया।**

और यही आख़िरी सबक़ था जिसकी उसे ज़रूरत थी। उसने अपनी ज़िंदगी उस चीज़ पर बनाई थी जो वो देख सकती थी: वो सूरज जिसे वो पूजती, वो तख़्त जिसकी वो मालिक, वो ताक़त जो वो रखती। और यहाँ, एक क़दम में, उसने सीखा कि **ज़ाहिर और हक़ीक़त एक चीज़ नहीं।**

'**क़ालत रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी — उसने कहा: मेरे रब, मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया — व अस्लम्तु म'अ सुलैमान लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन — और मैं सुलैमान के साथ अल्लाह, जहानों के रब, के फ़रमाँबरदार हुई।**'

बेटा, उसके अल्फ़ाज़ ग़ौर कीजिए: 'सुलैमान के साथ **अल्लाह** के'। सुलैमान की नहीं। **सुपुर्दगी के लम्हे में भी, उसकी तौहीद ठीक थी।**

बे-चारे की पुकार कौन सुनता है?

फिर सूरह समूद और लूत (अलैहि0) की क़ौम को याद करती है, और सवालों के एक हिस्से पर आती है जिनका जवाब कोई नहीं दे सकता, बेटा — हर एक 'क्या अल्लाह के साथ कोई माबूद है?' पर ख़त्म होता है।

'**अम्-मन ख़लक़स्-समावाति वल्-अर्ज़ व अन्ज़ल लकुम मिनस्-समा-इ मा-अ**

— **कौन** ने आसमानों और ज़मीन को बनाया और तुम्हारे लिए आसमान से बारिश उतारी? **फ़-अम्बत्ना बिही हदा-इक़ ज़ात बह्जह** — और हमने उस से **ख़ूबसूरती और रौनक़** वाले बाग़ उगाए — **मा काना लकुम अन तुम्बितू शजरहा** — तुम्हारे बस में **न था** कि उनके दरख़्त उगाओ।'

'**अम्-मन ज'अलल्-अर्ज़ क़रारंव्-व ज'अल ख़िलालहा अन्हारा** — कौन ने ज़मीन को एक ठहराव वाली **जगह** बनाया और उस में नहरें रखीं — **व ज'अल लहा रवासिय व ज'अल बैनल्-बहैनि हाजिज़ा** — और उसके लिए मज़बूत पहाड़ बनाए और दो समंदरों के दरमियान एक **आड़** रखी?'

और फिर, बेटा, वो आयत आती है जिसे चौदह सदियों से हर बे-चारे मोमिन ने पढ़ा:

'**अम्मंय्युजीबुल्-मुज़्तर्र इज़ा द'आहु व यक्शिफ़ुस्-सू-अ व यज्'अलुकुम ख़ुलफ़ा-अल्-अर्ज़** — **या वो कौन जो बे-चारे की पुकार सुनता है जब वो उसे पुकारे, और तकलीफ़ दूर करता है, और तुम्हें ज़मीन में जानशीन बनाता है? अ इलाहुम्-म'अल्-लाह — क्या अल्लाह के साथ कोई माबूद है? क़लीलम्-मा तज़क्करून — तुम कम ही नसीहत लेते हो।**'

बेटा, लफ़्ज़ '**अल-मुज़्तर्र**' को खोल कर देखिए। ये 'ज़रूरह' से आता है — मजबूरी, बे-बसी, एक कोने में **धकेल** दिए जाना। एक 'मुज़्तर्र' वो है जिसके पास कोई चारा नहीं बचा: हर दरवाज़ा आज़मा लिया, हर शख़्स से माँग लिया, हर मंसूबा नाकाम हो गया।

और अल्लाह ख़ुद को उस शख़्स का **जवाब** देने वाला बयान करते हैं।

बेटा, अल्फ़ाज़ में एक हैरत-अंगेज़ बात ग़ौर कीजिए। ये नहीं कहता 'जो नेक की पुकार सुनता है' या 'जो आलिम की'। ये कहता है: **बे-चारे।** सिर्फ़ एक शर्त ज़िक्र हुई है: बे-बसी।

तो एक कोने में पड़ा गुनहगार भी अहल है। एक शख़्स जिसने बरसों नमाज़ न पढ़ी अहल है। **जो भी वाक़ई कोने में हो और पुकारे — ये आयत उसी के बारे में है।**

बेटा, और इस में एक सख़्त सचाई भी है: हम में से ज़्यादा तर तब ही 'मुज़्तर्र' बनते हैं

जब बाक़ी सब नाकाम हो जाए। अल्लाह हमें देर से आने पर रद्द नहीं करते — मगर तसव्वुर कीजिए उन्हें उस शिद्दत से पुकारना **कोने से पहले**, सिर्फ़ उसके अंदर नहीं।

'**क़ुल ला यअ्लमु मन फ़िस्-समावाति वल्-अर्ज़िल्-ग़ैब इल्लल्-लाह — कहो: आसमानों और ज़मीन में कोई ग़ैब नहीं जानता सिवाए अल्लाह के — व मा यश्'उरून अय्यान युब्'असून** — और वो शु'ऊर नहीं रखते कि वो कब उठाए जाएँगे।'

कहो: सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, नबी ﷺ को ये बताए जाने से कि वो ख़ुद को कैसे पेश करें और कैसे ख़त्म करें।

'**व इन कज़्ज़बूक फ़-क़ुल ली 'अमली व लकुम 'अमलुकुम** — और अगर वो तुम्हें झुठलाएँ, तो कहो: **मेरे लिए मेरे अमल, और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल — अन्तुम बरी-ऊन मिम्मा अअ्मलु व अना बरी-उम्-मिम्मा तअ्मलून** — तुम उस से बरी हो जो मैं करता हूँ, और मैं उस से जो तुम करते हो।'

बेटा, एक बा-वक़ार जुदाई बिना दुश्मनी के। **आप से हर बहस जीतने की तवक़्क़ो नहीं; आप से साफ़ होने की तवक़्क़ो है।**

'**इन्नक ला तुस्मि'उल्-मौता व ला तुस्मि'उस्-सुम्मद्-दु'आ-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन** — बेशक, तुम **मुर्दों** को नहीं सुना सकते, न **बहरों** को पुकार सुना सकते हो जब वो पीठ फेर कर भाग जाएँ।'

'**फ़-तवक्कल 'अलल्-लाह — तो अल्लाह पर भरोसा करो — इन्नक 'अलल्-हक़्क़िल्-मुबीन** — बेशक, तुम **खुले हक़** पर हो।'

और सूरह की आख़िरी आयत, बेटा: '**व क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहि स-युरीकुम आयातिही फ़-तअ्रिफ़ूनहा — और कहो: सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए। वो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा, और तुम उन्हें पहचान लोगे — व मा रब्बुक बि-ग़ाफ़िलिन 'अम्मा तअ्मलून — और तुम्हारा रब उस से ग़ाफ़िल नहीं जो तुम करते हो।**'

बेटा, हिदायत देखिए: सारे इनकार, मज़ाक़, और बरसों की जद्दो-जहद के बाद — **कहो: अल्-हम्दु लिल्लाह।**

यही वो अंदाज़ है जो ये पूरी सूरह सिखाती आई है। एक चींटी की तंबीह ने एक बादशाह से अल्-हम्दु लिल्लाह कहलाया। एक तख़्त के ज़ाहिर होने ने उसे 'ये एक आज़माइश है' कहलाया। और एक रसूल जो इनकार का सामना कर रहा है उसे अल्-हम्दु लिल्लाह कहने को कहा जा रहा है।

बेटा, **सूरत-ए-हाल आपको जो भी दे — एक छोटी तंबीह, एक बड़ी नेमत, या एक साफ़ इनकार — मोमिन का जवाब वही एक जुमला है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. एक चींटी ने हुस्न-ए-ज़न सिखाया: 'जब कि उन्हें शु'ऊर तक न हो' — बुराई मानने से पहले बे-तवज्जोही मानो।

2. एक बड़ा लीडर सब से निचले दर्जे की सुनता और उसपर अमल करता है।

3. जरनैलों से घिरी एक मलिका ने जंग पर मशवरा और डिप्लोमेसी चुनी — और ठीक नाम लिया कि फ़तह एक शहर के साथ क्या करती है।

4. किताब के इल्म ने 'इफ़रीत की ताक़त को मात दी — जो वही से जुड़ा है वो एक दूसरे दर्जे पर काम करता है।

5. 'ये मेरे रब के फ़ज़्ल से है, ताकि वो मुझे आज़माए' — हर नेमत एक इम्तेहान का पर्चा है जिसपर तुम्हारा नाम है।

6. ज़ाहिर हक़ीक़त नहीं: एक शीशे के फ़र्श को उस मलिका ने पानी समझा जो सिर्फ़ अपनी आँखों पर टिकती थी।

7. वो 'अल-मुज़्तर्रं' की सुनता है — सिर्फ़ एक शर्त ज़िक्र हुई: कोने में होना। उसे कोने से पहले पुकारो, सिर्फ़ उसके अंदर नहीं।

या अल्लाह, जो आप दें उस पर हमें शुक्र-गुज़ार बना दीजिए और हमारी वैसे सुनिए जैसे आप बे-चारे की सुनते हैं। आमीन।